सम्पादकीय

सभ्यता एवं संस्कृति सतत् प्रवाहमान जीवनधारायें हैं जो भारतीय दृष्टि से मानव के जीवनदर्शन का महत्त्वपूर्ण आधार रही हैं। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के आदर्श चिरन्तनकाल से विश्व मानव को अभिप्रेरित करते रहे हैं। भारत का सांस्कृतिक दिव्य सन्देश आज भी मानवीय चिन्तन को नया आयाम प्रदान करता है। ''विश्व दीप दिव्य सन्देश'' भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु कृतसंकल्प है। इसका यह अङ्क भारतीय अस्मिता, गौरव, ज्ञान के उन ज्ञात-अज्ञात पहलुओं को आपके समक्ष प्रस्तुत करता है जिनकी आज के वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में भी सर्वाधिक अपेक्षा, आवश्यकता एवं उपादेयता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

भारतीय ज्ञान-विज्ञान के सन्दर्भ में पं. अनन्त शर्मा ने वेद, पुराण एवं मनुस्मृति के साक्ष्यों से यह सिद्ध किया है कि धर्म सबका आधार है। अतः उसकी अपेक्षा निश्चित रूप से मानव कल्याण एवं विश्व कल्याण के निमित्त नितान्त अपरिहार्य है। इस सन्दर्भ में वैदिक कर्मयोग का निरूपण करते हुए उन्होंने प्रवृत्ति निवृत्ति मार्ग को यथार्थतः समझाने की चेष्टा की है। श्रेयस् की सिद्धि इसी से सम्भव है तथा अभ्युदय के लिए वेदानुशासन की परम आवश्यकता है।

डॉ. शिवदत्त शर्मा ने प्राणिमात्र के स्वास्थ्य के सन्दर्भ में वेद के चिन्तन की छवि प्रस्तुत की है। दिनचर्या के नियमों की धर्म में प्राथमिकता के आधार पर भी भारतीयों के स्वास्थ्य चिन्तन की उत्कृष्टता को आपने प्रतिपादित किया है। अनेक धार्मिक उपादानों के उदाहरणों के माध्यम से आपने सिद्ध किया है कि स्वास्थ्य चेतना जनजीवन से सर्वदा संपृक्त विषय रहा है किन्तु वर्तमान में उसकी विशृंखलता ही यत्र तत्र सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। अतः इस क्षेत्र में मानव मात्र को पर्याप्त सोचने एवं समझने की आवश्यकता है।

'वास्तवे हिन्दुः कः' शीर्ष कविता में डॉ. नारायणशास्त्री काङ्कर ने हिन्दुत्व के उच्चादर्शों से अवगत कराने हेतु सत्सन्दर्भित अपनी आत्मव्यथा की स्पष्ट एवं ओजमयी प्रस्तुति की है। आपके मत में हिन्दुत्व हीनत्व नहीं है। भारतीयता के पर्याय रूप में हिन्दुत्व को प्रतिष्ठापित किये जाने का औचित्य दर्शाते हुए आपने भारतीय संस्कृति का ही हिन्दु संस्कृति नाम से अभिहित किया है। संस्कृत के माध्यम से हिन्दुत्व के प्रचार-प्रसार से विश्व को नवीन दिशा प्राप्त होगी ऐसा आपका अभिमत लक्षित होता है।

धार्मिक उदारता के सन्दर्भ में महामहोपाध्याय देवर्षि कलानाथ शास्त्री का लेख 'उदार सृष्टि : हमारे

धर्म की संजीवनी' अत्यन्त प्रेरणास्पद होने के साथ-साथ भारतीयता के संरक्षित बने रहने में स्वयं उसके स्वरूप की महत्ता को लक्षित करता है। धर्म के क्षेत्र की व्यापकता को प्राचीन काल से ही स्वीकार किया जाता रहा है। सुश्री प्रिया सैनी ने 'हिन्दु धर्म में योग की अवधारणा'' विषयक लेख में योग से धर्मसिद्धि का प्रतिपादन किया है अर्थात् धर्म के लिए भी योग की अपेक्षा है।

'रक्षासूत्र' लेख में पं. गोपीनाथ पारीक ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति की परम्परा का पल्लवन करने वाले पर्वोत्सवादि के रूढ स्वरूपों की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए इस कड़ी में रक्षा बन्धन के महत्त्व को दर्शाने की चेष्टा की है। प्रोफसर कमलचन्द्र योगी द्वारा लिखित 'श्रीविद्यायोगसाधना' शीर्षक छन्दों में भारतीय तन्त्रविद्याओं की महत्ता एवं उसके अन्तर्गत श्रीतत्त्व की उपासना के गूढ रहस्यों का प्रस्तुतीकरण करने का प्रयास किया है जो स्तुत्य एवं प्रशस्य है।

डॉ. शालिनी सक्सेना के 'कृष्णस्तु भगवान् स्वयं' लेख में भारतीय धर्म एवं संस्कृति में स्वीकार्य अवतारवाद की प्रतिष्ठा के प्रति मानवीय श्रद्धा की अभिव्यक्ति देखी जा सकती है। अवतार के स्वरूप में ऐश्वर्य का अनुभव भी मानव कल्याण के मार्ग को प्रशस्त करता है। भक्ति साधना के लिए भी यह एक स्वर्णिम सोपान है जिसके हृदयंगम करना सर्वाधिक उपयोगी प्रतीत होता है।

दिव्य संदेश के सभी लेख एवं कवितायें आपको भारतीय ज्ञानगरिमा का अवगाहन करने का अवसर प्रदान करती है। आशा है यह अंक आप सभी पाठकों को अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर करने में पर्याप्त उपयोगी सिद्ध होगा।

–सम्पादक